“राजस्थान के सरकारी और निजी सूकलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन”

“बेटी बचाओबेटी पढ़ाओ,”

शिक्षा शास्त्र विषयमें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध रूपरेखा(सिन्पासिस)

विषय-शिक्षा शास्त्र

शोध निर्देशका
JV’n (प्रो) डॉ मंजू शर्मा

शोधार्थी
JV’N शालिनी यादव

फैकल्टी ऑफ एज्यूकेशन एण्ड मैथोड़ोलोजी
शिक्षा शास्त्र विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर, (राजस्थान)

2020

शोध शार्षिक-राजस्थान के सरकारी और निजी सूकलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

नेतृत्व अर्थात लीडरशिप एक ऐसा शब्द है, दिमाग में आते ही राजनीतिज्ञ अथवा राजनीति का बोध कराता है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। इसका दायरा असीमित है। नेतृत्व समाज में अत्यन्तमहत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे ही समाज की विविध क्षेत्रों जैसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक एवं शैक्षिक आदि में एक नवीन परिवर्तन आता है। बिना नेतृत्व के कोई भी देश हो, समाज हो या संस्था हो सुचारू रूप से विकास या उन्नति नही कर सकते हैं। सभी को एक कुशल नेतृत्व व नेतृत्वकर्ता की आवश्यकता होती है। नेतृत्वकर्ता रेलगाड़ी के इंजन की तरह होता है, अगर वह अपना संतुलन व गति ठीक बनाये रखता है, तो रेल गाड़ी अपने गंतव्य तक सुचारू रूप से पहुँच जाती है, परन्तु इसकी विपरीत स्थिति होने पर रेलगाड़ी गंतव्य तक पहुँचने में असफल रहती है।

ठीक इसी प्रकार किसी भी देश, समाज या संस्थान की बागडोर उसकी नेतृत्वकर्ता पर आधारित होता है। वह ही अपने जिम्मेदारियों को सही ढंग से समझते हुए अपने साथियों को उचित मार्गदर्शन कर अपने देश, समाज और संस्था को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकता है।

विद्यालयों में भी शिक्षकों केयोग्यता, अनुभव, कार्यकुशलता तथा ज्ञान से विद्यार्थी प्रभावित होता है। शिक्षा ग्रहण के दौरान ही विद्यार्थियों में इन सभी क्रियाओं का बोध होता रहता है और इसी नेतृत्व से विद्यार्थी प्रभावित होता है और अपने जीवन में इन्ही क्रियाओं को करने का प्रयास करता है।

विद्यालयों में प्राध्यापक मुखिया होता है,तो शिक्षक नेता की भूमिका में होते है। शिक्षक विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों के लिये ही नहीं बल्कि समाज के लिये भी आदर्श होता है। जिस प्रकार से किसी भी समिति का मुखिया उसका सर्वोसर्वा होता है और उसके समस्त कार्यकरता उसका ही अनुसरण करते है,वे उस समिति को उन्नति की ओर ले जाने का कार्य करने है,साथ ही सन्निहित लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति करते है। ठीक इसी प्रकार से शिक्षक विद्यार्थियों और समाज के लिये मार्गदर्शक की भूमिका में होता है। शिक्षक के आचरण,ज्ञान,व्यवहार,मत,अभिमत,सिद्धांत से प्रभावित होकर ही विद्यार्थी अपने आचरण में आत्मसात करने की प्रवृत्ति पैदा करते है,और यही प्रवृत्ति उनके स्वयं के,परिवार के,समाज के और देश के भविष्य का निर्धारण करते है।

नेतृत्वशीलता का गुण व्यक्ति के समस्त पक्षों को प्रभावित करता है। नेतृत्व एक प्रक्रिया व दशा है जिसमे कोई व्यक्ति सामाजिक प्रभाव के द्वारा अन्य लोगों की सहायता लेते हुए एक सर्वनिष्ट कार्य सिद्ध करता है। शासन करना, निर्णय लेना, निर्देशन करना, आज्ञा देना आदि सब एक कला है, एक कठिन तकनीक है परन्तु अन्य कलाओं की तरह यह एक नैसर्गिक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति में यह गुण या कला समान नही होती है। प्रबंधक एक कुशल नेतृत्व कर्ता के रूप में अपने सहयोगी कर्मचारियों से अपने निर्देशानुसार, योग्यतानुसार और क्षमतानुसार ही कार्य करवाता है। जैसा प्रबंधक का व्यवहार होता है, जैसे उसके आदर्श होते है, उसके कर्मचारी भी समतुल्य

वैसे ही व्यवहार निर्धारित करते हैं। इसलिए शिक्षकों का नेतृत्व जैसा होगा, विद्यार्थी भी उसी के अनुरूप अपने कार्य-व्यवहार को आगे चलकर संपन्न करेंगे।

शिक्षक किसी भी विद्यालय की रीढ़ होता है,इसलिये कहा गया है कि शिक्षकों को व्यक्तित्व गुणों से विभूषित होना चाहिए। शिक्षकों के व्यक्तित्व में सभी प्रकार के गुण विद्यमान होने चाहिए जो एक कुशल नेतृत्वकर्ता के लिये आवश्यक होते है। विद्यालयों में अनुकूल नेतृत्व पर ही विद्यालय की संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था और संचालन निर्भर करता है। विद्यालयों में शैक्षणिक कार्य जितना सुचारू रूप से संचालित होगा,अनुशासन भी उसी मात्रा में अनिवार्य होगा। अनुशासन और नेतृत्व क्षमता दो ऐसे पहलू होते है,जो विद्यालयों में शैक्षणिक कार्य की गति बढ़ाने में उत्तप्रेरक का काम करते है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि कुशल नेतृत्व के अभाव में कोई भी संगठन या विद्यालय न तो व्यवस्थित रूप से संचालित हो सकता है और न ही अपनी पूर्ण संरचना प्राप्त कर वांछित लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में प्रगृति कर सकता है। कुल मिलाकर कुशल नेतृत्व के अभाव में किसी भी संगठन की स्थिति कटी हुई पतंग की तरह होता है जो उद्देश्यहीन होकर आसमान में इधर उधर भटकते हुए जमीन पर आ गिरती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकारी और निजी विद्यालयों के महिला शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान में महत्वपूर्ण विषय है,क्योंकि सरकारी और निजी विद्यालयों में हर जगह पर कड़ी प्रतिस्पर्धा है। इन प्रतिस्पर्धा के बीच में ही नौनिहालों के भविष्य का निर्धारण होता है।

शैक्षिक नेतृत्व की आवश्यकता एवं महत्व

कोई भी समूह अपने कार्यो का सम्पादन नेता के माध्यम से ही करना चाहता है। नेतृत्व युक्त समूह गौरव का अनुभव भी करता है। जिस समूह अथवा समाज का कोई नेता नहीं होता वह समूह दिशाहीन तथा उद्धेश्यहीन होता है। आजकल अपने देश में प्रजातन्त्र की स्थापना हो चुकी है देश में विभिन्न समाजों, सम्प्रदायों संगठनों तथा संस्थाओं की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। अतएव नेताओं की संख्या का भी उसी अनुपात में बढ़ना स्वाभाविक है एक समूह अथवा समाज में कई नेता भी उदित हो जाते हैं परन्तु इन सभी का सर्व प्रमुख नेता एक ही व्यक्ति होता है, अन्य सह-नेता कालान्तर में प्रमुख नेता की बातों का ही अनुमोदन करने लगते हैं। इतना निश्चित है कि समाज में नेतृत्व की आवश्यकता निस्सन्देह होती है।

आवश्यकता (Need) शिक्षा का क्षेत्र भी अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र है। देश की रचनात्मक तथा विकासात्मक अवस्था के मूल में शिक्षा ही होती है। उत्तम शिक्षा तथा समाजोपयोगी शिक्षा की व्यवस्था शैक्षिक नेतृत्व के अभाव में कदापि नहीं हो सकती। शिक्षा विभाग के अन्तर्गत असंख्य शिक्षण-संस्थाएं समाज-कल्याण में ही सहायक होती है। इन संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्र तथा शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक दिन-रात अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया

में तल्लीन रहते हैं परन्तु छात्रों, अध्यापकों तथा संरक्षकों की कार्य क्षमता को उचित दिशा दिखाने के लिये शैक्षिक नेतृत्व की परमावश्यकता होती है।

शैक्षिक नेतृत्व और उसका कार्य क्षेत्र

किसी भी संगठन का कार्य-संचालन करने के लिये नेतृत्व शक्ति की उपयोगिता को स्वीकार किया जाता है। नेता अपनी सूझ-बूझ से अनेक कार्यो को सम्पादित करता है। शैक्षिक नेतृत्व के प्रमुख कार्यो को सम्पादित करता हैं शैक्षिक नेतृत्व के प्रमुख कार्यो के सम्बन्ध में भी विद्वानों ने विचार किया है। रेम्सेयर तथा अन्य (Ramseyer john. A and other) ने ओहियो (Ohia) विश्वविद्यालय के शिक्षा महाविद्यालय में शैक्षिक नेतृत्व के कार्यो के निम्नलिखित नौ क्षेत्रों को गिनाया गया है-

1. कार्यो के लिये उद्धेश्यों को निश्चित करना।
2. नीति निर्धारित करना।
3. कार्यो का निश्चय करना।
4. प्रशासकीय कार्यो तथा उनके ढाचे में समन्वय करना।
5. प्रभाव का मूल्यांकन।
6. शिक्षा विकास हेतु सामाजिक नेतृत्व के साथ मिलकर कार्य करना।
7. सामाजिक शैक्षिक सामानों का उपयोग करना।
8. समाज के व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करना।
9. सम्बन्धित तथा शैक्षिक कार्यो में सहायक व्यक्तियों से विचार-विनिमय करना।

2-समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

2.1-विद्यालय

विद्यालय वह स्थान है, जहाँ शिक्षा ग्रहण की जाती है। "विद्यालय एक ऐसी संस्था है, जहाँ बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास होता है। ' विद्यालय' शब्द के लिए आंग्ल भाषा में 'स्कूल' शब्द का प्रयोग होता है, जिसकी उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Skohla' या 'Skhole' से हुई है, जिससे तात्पर्य है- 'अवकाश'। यह अर्थ कुछ विचित्र - सा लगता है। परंतु वास्तविकता यह है कि प्राचीन यूनान में अवकाश के स्थलों को ही विद्यालय के नाम से संबोधित किया जाता था। अवकाश काल को ही 'आत्म -विकास' समझा जाता था। जिसका अभ्यास अवकाश नाम निश्चित स्थान पर किया जाता था। धीरे-धीरे यह अवकाश स्थल एक निश्चित उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम का ज्ञान प्रदान करने वाली संस्थाएं अर्थात स्कूल बन गए। प्राचीन भारत में विद्यालय गुरुकुल के रूप में होते थें। ये अक्सर गुरु के घर या किसी मठ में होते थें। मुग़लों के ज़माने में, बच्चों को शिक्षित करने के लिये 'मदरसों' का आरम्भ किया गया था। अंग्रेज़ी दस्तावेज़ों के अनुसार, १८वीं सदी में देश में विद्यालय सामान्य थें। पूरे देश में मंदिर, मस्जिद और गांव में एक विद्यालय का होना सामान्य था। इनमें पढ़ना, लिखना, धर्मशास्त्र, क़ानून, खगोल/एस्ट्रोनॉमी, आचार-विचार, जीव, चिकित्सा विज्ञान और धर्म के बारे में सिखाया जाता था।

ब्रिटिश साम्राज्य में इंग्लैंङ, अमरीका और भिन्न देशों से क्रिश्चियन मिशनरियों ने, मिशनरी और आवासीय विद्यालय खोले थें। जैसे ये प्रसिद्ध हुए, तो कुछ विद्यालय खोले गए, और कुछ विद्यालयों को सम्मान भी मिला। आज ज़्दायातर विद्यालयों में पढ़ाई-लिखाई के दौरान अनुशासन और पट्यक्रमों में अंग्रेज़ी नियमों का पालन किया जाता है। आज भारत में कई शिक्षा बोर्ड/मंङल हैं। उदाहरण स्वरूप: केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, सी.आइ.सी.एस.सी व अन्य स्टेट/राज्य के बोर्ङ आदि। आजकल सामान्य रूप से भाषा, गणित, विज्ञान, भौतिकी/फिज़िक्स, रसायनी/केमिस्ट्री, जीव विज्ञान, भूगोल/जियोग्राफी, इतिहास, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान सिखाए जाते हैं। इसके अलावा स्कूलों में खेल कूद, गाना, चित्रकारी व नाटक भी होते हैं।

2.2-नेतृत्व क्षमता

नेतृत्वशीलता को अंग्रेजी में लीडरशिपकहते हैं। विद्वानों ने नेतृत्व शीलता को भिन्न भिन्न प्रकार से स्पष्ट किया है। कभी कभी इसका अर्थ प्रसिद्धि से समझा जाता है। लोकतान्त्रिक दृष्टि से इसका अर्थ उस स्थिति से समझा जाता

है जिसमे कुछ व्यक्ति स्वेच्छा से दूसरे व्यक्तियों के आदेशों का पालन कर रहें हों और कभी कभी कोई व्यक्ति शक्ति के आधार पर दूसरों से मनचाहा व्यवहार करवा लेने की क्षमता रखते हों तो उसे भी नेतृत्व के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है।

वास्तव में नेतृत्व का अर्थ है आगे आगे चलना। जो व्यक्ति कार्य को पूरा करने के लिए तथा दूसरों के मार्गदर्शन के लिए आगे चले, वही नेता है। अतः लोगों को अपने निर्देशानुसार चलाने की क्षमता ही नेतृत्व शीलता होती है।

2.3-शिक्षक

शिक्षण ही शिक्षक का पहला उत्तरदायित्व है अत: उसे अपने शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए पूरे प्रयास करना चाहिए। उसे अपने विषय में पारंगत होना चाहिए साथ ही शिक्षण की नवीनतम् विधियों की जानकारी होनी चाहिए।

यह स्पष्ट करने के बाद कि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का पद बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन परिवर्तन हो रहा है और उसमें नवीनता लाने का प्रयास जारी है ऐसी स्थिति में शिक्षक को अपने अन्दर निपुणता लाना आवश्यक होता है क्यों कि वह विद्यालय में अहम भूमिका का निर्वाह करता है। शिक्षक की नियुक्ति करते समय उसके निम्नलिखित गुणों पर ध्यान देना आवश्यक है जो इस प्रकार है-

अध्यापक के गुणों को हम तीनों भागों में विभक्त कर सकते हैं-

(i) वैयक्तिक गुण-

1. आकर्षक व्यक्तित्व- आकर्षक व्यक्तित्व सभी पर अपना प्रभाव छोड़ता है। व्यक्तित्व का तात्पर्य शारीरिक सुन्दरता से नहीं है वरन् इसका तात्पर्य है अध्यापक का आत्मविश्वास, उसकी वेश-भूषा, उस की चाल-ढाल एवं बातचीत करने का ढंग उचित तथा उसकी गरिमा के अनुकूल होना चाहिए।

2. उत्तम स्वास्थ्य- प्लेटो के अनुसार स्वस्थ मस्तिष्क के लिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है। यदि शिक्षक स्वस्थ नहीं होगा तो वह अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार से सम्पन्न नहीं कर सकेगा। अत: शिक्षक का अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए।

3. चरित्रवान होना- प्रायः बच्चों के लिए उनके शिक्षक ही आदर्श होते हैं और वो अपने को शिक्षक के अनुसार ही ढालने का प्रयास करते हैं। अत: शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के समक्ष अच्छे चरित्र का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए।

4. नेतृत्व की क्षमता- एक आदर्श अध्यापक में लोकतन्त्रीय नेतृत्व की क्षमता होना भी आवश्यक है। नेतृत्व का अर्थ केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। उसका तात्पर्य है कि शिक्षक में वह क्षमता होनी चाहिए जिससे कि वह विभिन्न शैक्षिक तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ठीक सेसंचालन कर सकें। अपने विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन कर सकें तथा उनको सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर सके।

5. संवेगात्मक संतुलन- शिक्षक में संवेगात्मक स्थिरता एवं संतुलन का होना भी बहुत आवश्यक है तभी वह अपने विद्यार्थियों का भावात्मक विकास कर सकेगा तथा उनके संवेगों को सुन्दर और कलात्मक ढंग से विकसित कर सकेगा।

6. सहानुभूति की भावना- शिक्षक में प्रेम और सहानुभूति की भावना होना भी परम् आवश्यक है। विद्यार्थियों के प्रति प्रेम और मित्रता पूर्ण व्यवहार से वह उनके आदर और विश्वास को जीत सकता है और उनका नेतृत्व करने में सफल हो सकता है।

7. निष्पक्षता- अध्यापक को जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर किसी प्रकार का भेद-भाव न करके सभी विद्यार्थियों के प्रति समान व्यवहार रखना चाहिए। कभी-कभी शिक्षक कुछ बालकों को अधिक चाहने लगते हैं, फल यह होता है कि कक्षा के अन्य बालक अपने को उपेक्षित समझने लगते हैं और उनमें शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है।

(ii) व्यावसायिक गुण-

1.विषय में पारंगत- शिक्षक का अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए विषय का गम्भीर अध्ययन होने पर ही वह विषय से सम्बन्धिता विद्यार्थियों की शंकाओं का, उनकी समस्याओं का निराकरण करने में सफल हो सकेगा तथा उनका विश्वास प्राप्त कर सकेगा। विषय के ज्ञान के अभाव में कोई भी व्यक्ति एक सफल शिक्षक नहीं बन सकता।

2. शिक्षण-कला का ज्ञान- केवल विषय में पारंगत होने से ही कोई व्यक्ति एक अच्छा शिक्षक नहीं बन जाता वरन् इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक में अपने ज्ञान को रुचिकर और प्रभावशली ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचाने की कला हो।

3. व्यावसायिक प्रशिक्षण- एक कुशल शिक्षक के लिए यह भी आवश्यक है कि उसको शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नवीनतम् प्रयोगों और तकनीकों की जानकारी हो। आज का युग विज्ञान का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। शिक्षक को शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी होना चाहिए। शिक्षक को नवीनतम् शिक्षण-विधियों का जान होना भी आवश्यक है जिससे कि वह विद्यार्थियों की रुचि और योग्यता के अनुरूप शिक्षण-विधि का प्रयोग करके उनका अधिक विकास कर सके।

4. बाल मनोविज्ञान का ज्ञाता- शिक्षक के लिए केवल अपने विषय का पर्याप्त ज्ञान होना ही आवश्यक नहीं है वरन् साथ ही साथ उसे शिक्षा मनोविज्ञान तथा बाल-मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का भी ज्ञान होना आवश्यक है जिससे कि वह बालकों की रुचियों, उनकी योग्यताओं और क्षमताओं के अनुसार ही उन्हें शिक्षित करके उनका अधिक से अधिक विकास कर सके।

5. प्रयोग एवं अनुसंधान में रुचि- आज शिक्षा में प्रयोग और अनुसंधान का महत्व दिन प्रतिदिनि बढ़ता ही जा रहा है। विदेशों में तो अनुसंधान ने शिक्षा की काया ही पलट दी है। हमारे देश में भी तेजी से अनुसंधान हो रहे हैं। यदि शिक्षक को अपने अपने शिक्षण में सुधार लाना है तो उसे नित्य-प्रति नए एवं अनुसंधान करते रहना चाहिए तभी वह अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सफल हो सकेगा।

6. पाठ्यसहगामी क्रियाओं में रुचि- आज की शिक्षा केवल कक्षा की चहारदीवारी तक ही सीमित नहीं है वरन् उसमें पाठ्य सहगामी क्रियाओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण एवं बहुमुखी विकास के लिए यह आवश्यक है कि पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं जैसे- खेल-कूल, स्काउटिंग/गाइडिंग एन.सी.सी., एन.एस.एस., वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में भी हिस्सा ले। अतः शिक्षक को इन क्रियाओं में भी रूचिय लेना चाहिए तथा उनके संगठन एवं संचालन में अपना पूरा योगदान देना चाहिए।

(iii) सामाजिक गुण-

1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में जन्म लेता है तथा समाज में ही अपना जीवन व्यतीत करता है। अतः शिक्षक में सामाजिक गुण जैसे- प्रेम, दया, सहयोग, सहानुभूति, सहनशीलता, धैर्य आदि का होना आवश्यक है। इससे उसमें सामाजिक समझदारी का विकास होगा तथा कक्षा और समाज दोनों में सामंजस्य स्थापित करने में सफल हो सकेगा।

2. समाज की संस्कृति तथा मूल्यों में आस्था- शिक्षक समाज की संस्कृति, उसकेमूल्यों और आदर्शों में आस्था रखने वाला व्यक्ति होना चाहिए तभी वह विद्यार्थियों को भी समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं और मूल्यों से परिचित कर सकेगा साथ ही उन्हें संस्कृति के संरक्षण तथा उसमें विकास एवं प्रसार के लिए प्रेरित कर सकेगा।

3. दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध- शिक्षक को विद्यार्थियों, सहयोगी शिक्षकों, प्रधानाध्यापक, अभिभावक तथा अन्य कर्मचारी वर्ग के अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होना एवं मार्ग-दर्शक का होना चाहिए। अपने सहयोगी शिक्षकों के प्रति उसका व्यवहार संतुलित एवं प्रेम चाहिए। विद्यार्थियों के प्रति उसका व्यवहार एक तानाशाह का नहीं वरन् एक मित्र, सुधारक, निर्देशक और सहयोगपूर्ण होना चाहिए। प्रधानाध्यापक विद्यालय का मुखिया होता है अतः शिक्षक को उसे पूरा आदर और सम्मान देना चाहिए तथा किसी भी दलबन्दी से अपने को अलग रखना चाहिए।

एक आदर्श शिक्षक के गुणों का उल्लेख करने के पश्चात् हम इसी निष्कर्ष पर आते है कि शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसके कन्धों पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है। बालकों के चरित्र को बनाने या बिगड़ने में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन:-

नेतृत्व गुणों के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा शोध कार्य किये गए हैं-

बी.जी. सुधा, सी.डी. शिवकुमार स्वामी (1991)ने प्राथमिक और हाई स्कूल के अध्यापकों की क्षमता पर संगठनिक परिवेश के प्रभाव की जांच पर अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होने पाया कि समक्षता के कुछ विशेष आयामों जैसे सम्प्रेषण और अंतःक्रिया की दृष्टि से अध्यापिकाएं अध्यापकों से अधिक सक्षम थीं।प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यांकन की क्षमता माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों से अधिक थी।मुक्त परिवेश सभी प्रकार की सक्षमताओं के लिए अन्य परिवेश से अधिक अनुकूल पाया गया।

पूनम अग्रवाल (1994) ने शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन किया है।उन्होने अपने निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापको का नेतृत्व व्यवहार सामान्य से उच्च स्तर का पाया गया।माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट पाए गए।माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक कार्य संतुष्टि के क्षेत्र आर्थिक पक्ष एवं भावी उन्नति के अवसर से संतुष्ट पाए गए।अन्य परिवेश से अधिक अनुकूल पाया गया।

अनुकूललाहोटी (2004)में माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यपकों का नेतृत्व क्षमता और सामान्य व्यवहार का अध्ययन किया। उन्होने अपने निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापको का नेतृत्व व्यवहार सामान्य से उच्च स्तर का पाया गया।माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट पाए गए।माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक कार्य संतुष्टि के क्षेत्र आर्थिक पक्ष एवं भावी उन्नति के अवसर से संतुष्ट पाए गए।

अनुसंधान के उद्देश्य:-

अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं-

1-सरकारी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व शैली का अध्ययन करना।

2-निजी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व शैली का अध्ययन करना।

3-महिला शिक्षकों के नेतृत्व क्षमता के विकास के विभिन्न आयामो का अध्ययन करना।

4-नेतृत्व क्षमता के विकास से विद्यार्थियों में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

5-सरकारी और निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6-महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता पर शैक्षणिक परिवेश के प्रभावों की जांच करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये निम्न परिकल्पाये निर्धारित की गयी है।

1-सरकारी और निजी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2-सरकारी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता से शैक्षणिक परिवेश परिवर्तनशील होता है।

3-निजीस्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता से शैक्षणिक परिवेश परिवर्तनशील नहीं होता है।

विधि तंत्र और शोध प्रविधि

किसी भी शोध के लक्ष्य तक पहुंचने के लिये आवश्यक है कि शोध की प्रकृति के अनुरूप ही विधि,प्रविधि एंव उपकरण हो। इसके अभाव में यह तथ्यहीन होता है। शोध अभिकल्प से तात्पर्य उस मार्ग से है,जिस पर चलकर शोध से संबंधित सत्य की खोज की जा सकें।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जायेगा। सर्वेक्षण विधि द्वारा तथ्यों को अधिक तर्कसंगत रूप से रखा जा सकता है। यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से संबंधिक न होकर समूह सम्बंधित न होकर समूह संबंधित है,और इसमें अधिक से अधिक विशेष लोगों को सम्मलित किया जा सकता है,जिससे की आकड़ों में विश्वसनीयता का प्रतिशत बढ़ सकता है। चयनित किये गये सरकारी और निजी स्कूलों से महिला शिक्षकों का चयन किया जायेगा। एक अनुसूची तैयार कर या पहले से नेतृत्व क्षमता को नापने की

मापनी का उपयोग कर महिला शिक्षकों से उनके विचार जानने का प्रयास किया जायेगा। इसके बाद सांख्याकीय विविधों जैसे सहसंबंध परीक्षण और काई परीक्षण के माध्यम से उनके बीच के अंतसंबंधों का विश्लेषण किया जायेगा।

शोध के लिये न्यादर्श

सरकारी और निजी स्कूलों की महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का अध्ययन करने के लिये 10 सरकारी और 10 निजी स्कूलों का चयन किया जायेगा। प्रस्तुत शोध कार्य में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श प्रणाली से न्यादर्श का चयन किया जायेगा। इस प्रकार से 10 सरकारी और 10 निजी स्कूलों से 200 महिला शिक्षकों का चयन किया जायेगा। यानि प्रत्येक स्कूल से 10 महिला शिक्षकों का चयन शोध कार्य के लिये किया जायेगा।

चर निर्धारण प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में नियत्रित चर,आश्रित चर और स्वंत्रत चर का निर्धारण किया गया है।

जिसमें नियत्रित चर सरकारी और निजी स्कूल है। आश्रित चर सरकारी और निजी स्कूल के महिला शिक्षक है। इसके अलावा स्वंत्रत के रूप में महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

किसी भी शोध में तथ्यपूर्ण सामग्री या दत्त जो अब तक अज्ञात है,उनका अध्ययन ही महत्वपूर्ण है,जिन्हें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से स्रोत से प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिये नवीन दत्त संकलित करने के लिये अथवा नवीन क्षेत्र का उपयोग करते हुए कतिपय यंत्रों अथवा उपकरण की आवश्कता होती है। इन्ही यंत्रों को उपकरण कहा जाता है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने नेतृत्व क्षमता के मापन के लिये स्व निर्मित मापनी का प्रयोग किया है। इसके अलावा महिला शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता को जानने के लिये रेटिंग्स का निर्माण किया जायेगा।

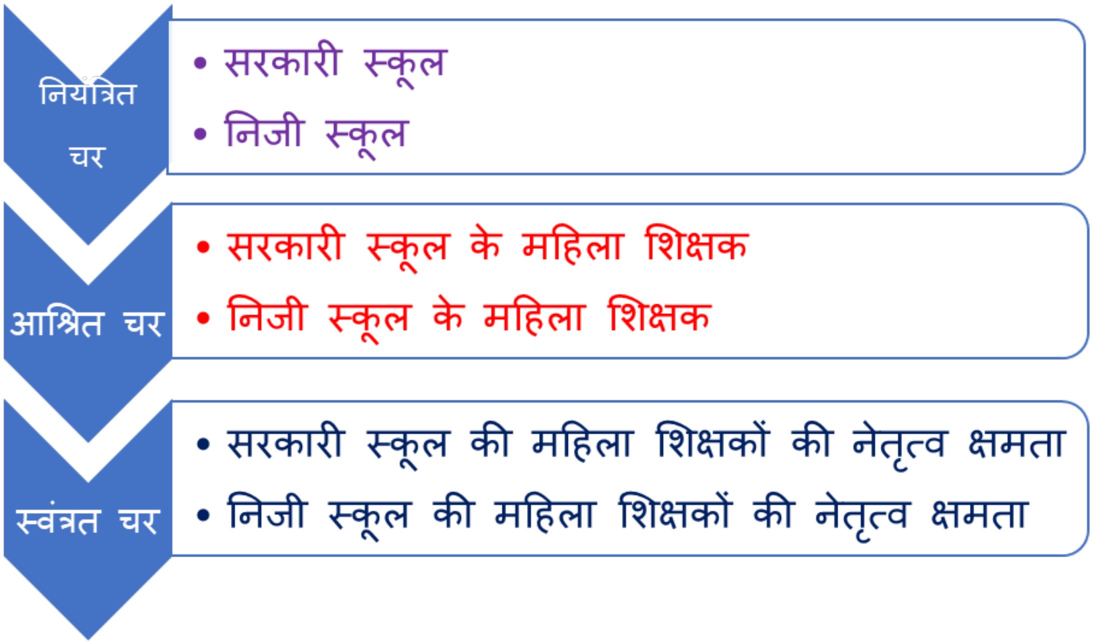

शोध का अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये जयपुर जिले का चयन शोध की प्रशासकीय इकाई के रूप में किया गया है। जयपुर,राजस्थान की राजधानी है।

जयपुर की जनसंख्या

2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर की जनसंख्या इस प्रकार से है।

जयपुर की कुल जनसंख्या	पुरूषों की संख्या	महिलाओं की संख्या
6626178	3468507	3157671

2011 की जनसंख्या के आकड़ो का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि जयपुर,राजस्थान प्रदेश का सबसे तेज गति से बढ़ने वाला शहर है। जयपुर जिले की जनसंख्या 66,26,178 है। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि जिस तेज गति से जयपुर शहर का विस्तार और जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है,उसके अनुसार 2021 में जयपुर जिले क जनसंख्या मे इस प्रकार से वृद्धि हो सकती है।

जयपुर पर्यटन के साथ ही शैक्षणिक गतिविधियो को लिये जाना पहाचाना नाम है। प्रदेश में केद्रीय विवि से लेकर कई निजी विवि,इंजीनियरिंग संस्थान मौजूद है। स्कूलों की स्थिति पर गौर करें तो

1-प्रदेश में 82869 स्कूल थे। शिक्षकों की कमी को देखते हुए सरकार ने स्कूलों के एकीकरण का अभियान शुरू किया। अब प्रदेश में 65740 स्कूल रह गये है। एकीकरण में 17129 स्कूलों को मर्ज कर दिया गया है।

2-जयपुर संभाग में 2989 स्कूल है। जिनमें जयपुर में 1073,झुंझुनु में 653,दौसा में 427,सीकर में 940,अलवर में 810 स्कूल है।

3-जयपुर जिले में 990 प्राथमिक स्कूल और 83 उच्च प्राथमिक स्कूल है।

4-राजस्थान सरकार सरकारी स्कूल में निजी स्कूल जैसी सुविधायें दे रही है। प्रदेश की 9177 ग्राम पंचायतों में पहली से 12वीं तक एक आदर्श स्कूल संचालित किया जा रहा है।

5-जयपुर में निजी स्कूलों की संख्या 560 है।

जयपुर जिले में स्कूलों की संख्या

कुल स्कूलों की संख्या	सरकारी स्कूलों की संख्या	निजी स्कूलों की संख्या
1633	1073	560

जयपुर में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का स्तर उच्चतम है।यही वजह है कि शोध कार्य के लिये जयपुर का चयन किया गया है।

शोध की सीमाये

किसी भी शोध के निष्कर्ष तक पहुंचने के लिये आवश्यक है कि शोध का सीमांकन किया जाये। प्रस्तुत शोध के तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचने के लिये शोध की सीमाओं का निर्धारण किया गया है। प्रस्तुत शोध की सीमायें इस प्रकार से है।

1-शोध के लिये जयपुर जिले का चयन किया गया है।

2-प्रस्तुत शोध में सिर्फ सरकारी और निजी स्कूलों का चयन किया गया है।

3-जयपुर जिले के सरकारी और निजी स्कूलों का चयन सौउद्देश्य निदर्शन प्रणाली से किया गया है।

4-सरकारी और निजी स्कूलों की सिर्फ महिला शिक्षकों को अध्ययन में शामिल किया गया है।

5-नेतृत्व क्षमता की जांच करने के लिये नेतृत्व क्षमता मापनी का उपयोग किया गया है।

6-नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होने वाले कारकों को अध्ययन में शामिल किया गया है।

7-नेतृत्व क्षमता न होने से होने वाली हानियों को भी अध्ययन क्षेत्र में शामिल किया गया है।

8-प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान बोर्ड से संबंद्ध और सीबीएससी पाठ्यक्रम दोनों प्रकार के विद्यालयों को शामिल किया गया है।

9-सरकारी और निजी स्कूलों के बीच नेतृत्व क्षमता को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

10-शोध में आईसीएस जैसे अन्य संबंद्ध पाठ्यक्रमों वाले स्कूलों को शामिल नहीं किया गया है।

11-प्रस्तुत शोध में हायरसेकेडरी तक के स्कूलों को शामिल किया गया है।

12-सरकारी और निजी स्कूलों में हायर सेकेडरी या सीनियर सेकेडरी तक के स्कूलों की महिला शिक्षकों को शामिल किया गया है।

अध्यायीकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन का अध्यायीकरण इस प्रकार से किया गया है।

अध्याय-01-प्रस्तावना-इस अध्याय में शोध की प्रस्तावना,समस्या कथन के शब्दों का परिभाषिक अर्थ,शोध का सैद्धातिक आधार,शोध का महत्व,शोध की रूपरेखा,शोध के उद्देश्य,शोध की परिकल्पना,शोध की प्रासंगिकता और शोध के अध्यायीकरण का वर्णन किया जायेगा।

अध्याय-02-संदर्भित साहित्य का अध्ययन-इस अध्याय में समस्या कथन से संबंधित विषयों पर पूर्व में हुए शोध अध्ययनों,लिखित साहित्य,प्रकाशित पुस्तकें,अप्रकाशित साहित्य,लघु शोघ आदि का वर्णन किया जायेगा।

अध्याय-03-शोध प्रविधि और शोध अभिकल्प-प्रस्तुत अध्ययन में शोध की प्रविधि चयन और शोध संरचना का वर्णन किया जायेगा। रिसर्च डिजाइन के माध्यम से शोध प्रविधि की पूरी संरचना का वर्णन किया जायेगा।

अध्याय-04-नेतृत्व क्षमता अर्थ,परिभाषा और प्रभावित करने वाले कारक-प्रस्तुत अध्ययन में नेतृत्व क्षमता का अर्थ,उसकी परिभाषा,नेतृत्व क्षमता को प्रभाविक करने वाले कारण,नेतृत्व क्षमता के विकास के विभिन्न आयाम,नेतृत्व क्षमता का विकास न होने की स्थिति में होने वाली संभावित हानियों के साथ ही नेतृत्व क्षमता के विकास के लाभकारी कारकों का वर्णन किया जायेगा।

अध्याय-05-परिणाम और विश्लेषण-चयनित उत्तरदाताओं के साथ अनुसूची के माध्यम से मिले विचारों का विश्लेषण किया जायेगा। इसके अलावा सांख्यकीय विधियों के प्रयोग से संहसंबंध और काई वर्ग परीक्षण कर परिकल्पानाओं को सिद्ध किया जायेगा।

अध्याय-06-सारांश,निष्कर्ष और सुझाव-प्रस्तुत अध्ययन में शोध के सारांश,निष्कर्ष और सुक्षावों का वर्णन किया जायेगा।

अध्याय-07-परिशिष्ट,संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध के संभावित निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में विद्यालय में महिला शिक्षकों की भूमिका और उनकी नेतृत्व क्षमता का अध्ययन किया जायेगा और आकड़ो के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत किया जायेगा। शोध में सरकारी और निजी स्कूल की महिला शिक्षकों के नेतृत्व शीलता का तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Borg Walter, R "Educational Research an Introduction New York Longmans, Green & Co, Ltd. 1963.Fox, DJ."The Research Process in Education", New York, Halt Rinehart and Winstons, 1969.
- Gadgil, D.R. (1965),Women in the working force in India, AsiaPublishing House, Bombay
- Good, C.V.(1945)"Dictionary of education". Mc Graw Hill BoomCo. U.S.A.
- Kakkar, S.B.(1998)"A research into the adjustment problems students of Secondary education'.
- गैरेट हेनरी, ई."शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी हिंदी अनुवाद"कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना
- कपिल, एच.के."अनुसन्धान विधियाँ" हर प्रसाद भार्गव पुस्तकप्रकाशन, आगरा १९८१
- Deodhar SY, Mahandiratta S, Ramani KV, Mavalankar D, Ghosh S, Braganza V. An Evaluation of Mid Day Meal Scheme. Journal of Indian School of Political Economy. 2010; 22(1-4):33-49.

- Paul PK, Mondal NK. Impact of Mid-day-Meal Programme on Academic Performance of Students: Evidnece from Few Upper Primary Schools of Burdwan District in West Bengal, International Journal of Research in social Science. 2012, 391-406. http://www.ijmra.us
- Uma. Mid-Day-Meal Scheme and Primary Education in India: Quality Issues Research Scholar Department of Public Administration Punjab University, Chandigarh, www.ijsrp.org. 2013, 1-3.
- Pongerner JA, Dutta P. A Study on Performance of Mid-Day-Meal Scheme with Reference to Ungma Village and Mokokchge Town of Nagaland. Journal of International Academic Research for Multidisciplinary Impact Factor. 2005; 3(7):365-376. Www.Form.Com.Page.
- Shri Nivasan R. Programme Evalution of I Cooked Mid Day Meal, Programme Evaluation Organization Planning Commision Govt. of India, New Delhi, 2010. ~ 837 ~ International Journal of Applied Research
- Pradip Giri. Effectiveness of Mid Day Meal as Persived by the Teachers and the Guariance, National MontlyReferedJounral of Research in Arts and Education. 2011. www.abhinavjounral.com. Email: Pradip.Giri2011@gmail.com
- Government of India Ministry of Human Resources Development. School Education and Litracy. Report of 5 th Review Mission on Mid Day Meal Scheme U.P. (8th July – 17th july, 2010). planningcommision.gov.in>peo-cmdm by (Middaymeal-2010). 2013.